कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 5203329

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय ....हिन्दी..........

परीक्षा का दिन..........शुक्रवार..........

दिनांक ....11 - 3 - 2017..........

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के ह[स्ताक्षर] .... संकेतांक ☐☐☐☐☐

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्र... मवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

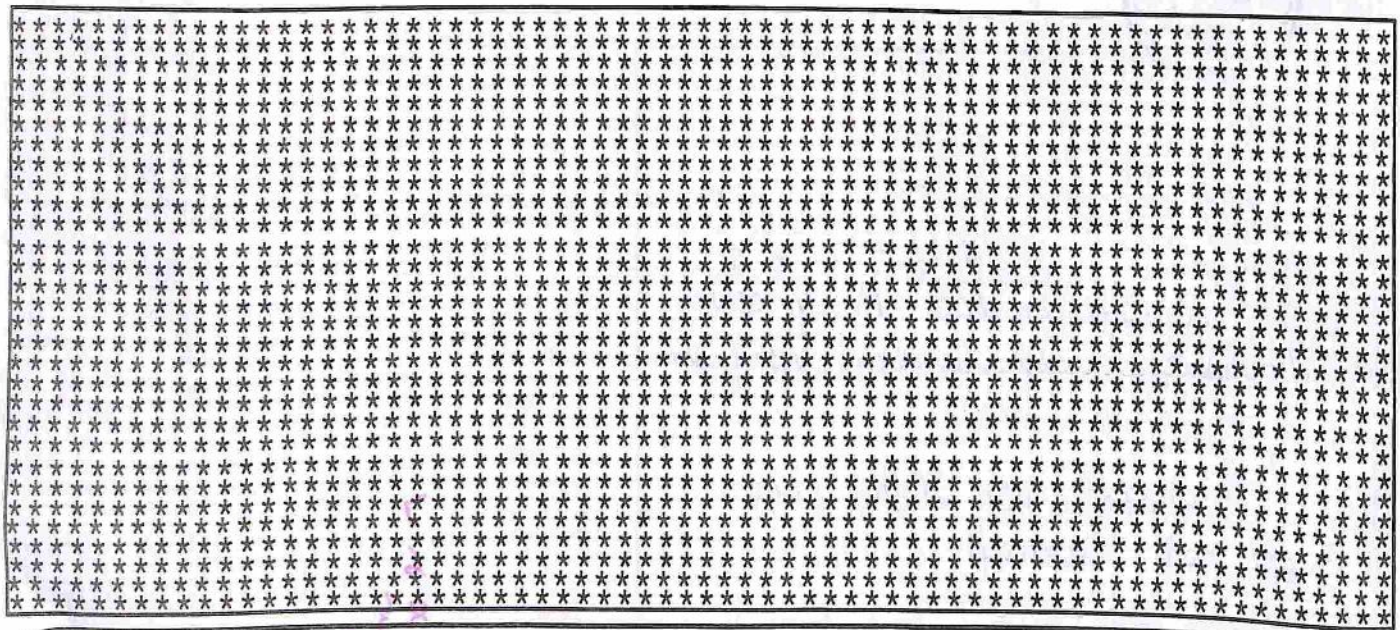

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड क

1 क "ममत्व प्रेमी हृदय" ।

ख मनुष्य का हृदय ममत्व प्रेमी है । अगर उसे वस्तु प्रिय है चाहे वह सुंदर न हो, उससे प्रेम करेगा लेकिन कभी-2 मानव हृदय अपनी चीज से संतुष्ट भी नहीं होता है व दूसरों की चीज पर लालायित रहता है ।

ग यदि मनुष्य अपने पास की वस्तु को अपना समझकर उससे प्रेम करता है चाहे वह भद्दी हो या काम न हो तो वह संतुष्ट होगा । इसके अलावा कभी - कभी मनुष्य जो पराई चीज की ओर आकृष्ट है, वह उसे वह वस्तु मिलने पर ही संतोष होता है ।

घ अपनी चीज से संतुष्ट मनुष्य पराई वस्तु चाहे वह मूल्यवान हो, उपयोगी हो, सुदर हो लेकिन उस वस्तु के नष्ट होने पर वह वह दुःख का अनुभव नहीं करता है । चाह क्योंकि वह वस्तु पराई है ।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		मनमोहिनी प्रकृति - - - - - - - -
	2	कौन-सा है ?
		- - - - - - - - - - -
	क	भारत देश
	ख	भारत देश में अनेक नदियाँ जैसे गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि अमृत के समान जल की धारा बहा रही हैं। ये नदियाँ अमृतदायिनी हैं। लोगों को पीने योग्य जल उपलब्ध करवाती हैं। ये नदियाँ हिमालय से जल प्राप्त करती हैं।
	ग	उपर्युक्त पद्यांश में मनमोहिनी शब्द प्रकृति के लिए प्रयुक्त है। यह प्रकृति मन को हरने वाली है और भारत देश इसी मन को आनंदित करने वाली प्रकृति की गोद में स्थित है।
	घ	उपर्युक्त पद्यांश में भारत देश की विशेषता बताई गई है। यह पदेश आनंददायिनी प्रकृति की गोद में स्थित है व स्वर्ग के समान है। इसके दक्षिण में हिन्द महासागर चरण धोता है व उत्तर में हिमालय पर्वत मुकुट के समान स्थित है। यहाँ अमृत प्रदान करने वाली नदियाँ बहती हैं और यहाँ हर वस्तु जैसे फल, फूल आदि उपलब्ध हैं।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड ख

उ क

स्वच्छता का महत्व

i. स्वच्छता क्या है ? ⇒

हमारे देश में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक स्वच्छता को महत्व दिया जाता रहा है और स्वच्छता शब्द का अर्थ भारतीय को प्रमाणित करना सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा। लेकिन स्वच्छता का शाब्दिक अर्थ अपने अंदर व बाहर की सफाई से लिया जा सकता है। स्वच्छता का महत्व हर कोई व्यक्ति जानता है लेकिन प्रगति के पथ पर आज मानव अग्रसर होता जा रहा है और स्वास्थ्य व स्वच्छता की अवहेलना कर रहा है व उपेक्षा कर रहा है। आज नैतिक गुणों का भी ह्रास होता जा रहा है जो मन की स्वच्छता की अपेक्षा करने के ही समान है। स्वच्छता का अर्थ वस्तुओं को व्यवस्थित रखना तो है ही साथ ही अनावश्यक वस्तुओं को अलग करना भी है।

ii. स्वच्छता के प्रकार ⇒

स्वच्छता शब्द अपनी परिभाषा का मोहताज नहीं है। स्वच्छता के विशेष रूप से दो प्रकार होते हैं :- (i) आंतरिक स्वच्छता बाह्य स्वच्छता। आंतरिक स्वच्छता से आशय है अपने मन की स्वच्छता, अपने मन में दूसरों के

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रति द्वेष की भावना, लालच, ईर्ष्या, व अन्य गलत आचरण का त्याग ताकि सदाचार अपना करके मन को स्वच्छ बना सके। जबकि बाह्य स्वच्छता अपने घर, सड़क व अन्य कई सार्वजनिक स्थानों रैलवे, बस स्टैण्ड व सभी स्थानों को गंदगी से मुक्त करना। जल को प्रदूषित नहीं करना व उसे पीने योग्य बनाना ही बाह्य स्वच्छता के समान है। ग्रामीण क्षेत्र में खुले में शौच करने से बाह्य स्वच्छता का ह्रास हुआ है, कारखानों द्वारा गंदा पानी नदियों में बहाने से भी जल प्रदूषित हुआ है।

[3] स्वच्छता के लाभ ⇒

"स्वच्छता अपना लक्ष्य बनाएँ।
रोगों को दूर भगाएँ"॥

स्वच्छता नहीं रहने से गंदगी फैलती है और गंदगी में मच्छर व मक्खी अनेक रोग वाहक जीवाणु पनपते हैं जो रोग उत्पन्न करते हैं। स्वच्छता ही रोगों से दूर रहने का पहला कदम है।

अपने इलाज के लिए मनुष्य अपने लाखों रुपये लगा देता है। स्वच्छता के कारण ही उन रुपयों की बचत होती है जिसे वह अपने विकास में लगा सकता है।

स्वच्छता के कारण लोगों को स्वच्छ व शुद्ध जल पीने के लिए मिलेगा। जिसके कारण से जल जनित रोगों की समस्या नहीं होगी।

शुद्ध पर्यावरण सभी के लिए आवश्यक है।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

पेड़ पौधे व हरियाली होने से प्रकृति की शोभा भी बढ़ जाती है और पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्या भी नहीं होती है। स्वच्छता स्वस्थ शरीर के लिए अत्यंत आवश्यक है।

[5] स्वच्छता : हमारा योगदान ⇒

क्या सफल होगा वह अभियान
जिसे मिले न जन भागीदारी।
रोगों की ओर करें ध्यान,
स्वच्छता की लें जिम्मेदारी॥

अपने देश, राज्य, घर को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है बल्कि हमारी अपनी भी जिम्मेदारी है और इस जिम्मेदारी का हमें निर्वहन करना चाहिए। [i] हमें संकल्प लेना चाहिए कि न तो हम स्वयं गंदगी फैलाएँगे न ही दूसरों को फैलाने देंगे। [ii] लोगों को स्वच्छता का महत्व बताकर इसके प्रति जागरुक करेंगे। [iii] भारत सरकार ने "स्वच्छ भारत अभियान" शुरू किया है और हम इस अभियान में अपनी हिस्सेदारी देकर इसे सफलता के मुकाम तक पहुँचाएंगे। [iv] पेड़-पौधे लगाएंगे। और स्वयं हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी की तरह सफाई करेंगे। [v] अपने घर की या बाहर की सफाई करना कोई नीचा काम नहीं है, इससे लोगों को अवगत कराएँगे।

[5] उपसंहार ⇒

स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता ही एक मात्र उपाय है और अगर मानव समय रहते इसके प्रति सजग नहीं हुआ तो भविष्य में इसके

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

घातक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। मनुष्य सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धि व शक्ति युक्त है। इसी कारण इसका कर्तव्य अधिक बढ़ जाता है। "जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है। जो सोवत है सो खोवत है जो जागत है सो पावत है।" इसलिए स्वच्छता के महत्व को समझते हुए इसके प्रति हमारे कर्तव्य को निभाना चाहिए।

"प्रकृति को स्वच्छ नहीं बना पाएंगे,
तो क्या खाक हम मानव कहलाएंगे"

USER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5

पत्रांक

सेवा में,

श्रीमान जिला शिक्षा अधिकारी

शिक्षा विभाग

चूरु

विषय – रिक्त पदों पर शिक्षक लगाने का निवेदन हेतु।

महोदय,

सादर नम्र निवेदन है कि मैं, गजपुर निवासी मदन हूँ। हमारे विद्यालय में पूर्व शिक्षक जो अंग्रेजी व हिन्दी विषय पढ़ाते थे, उनका स्थानांतरण अन्य विद्यालय में हो गया है। जिस कारण हमारे विद्यालय में इन शिक्षकों के लिए रिक्त पद हैं। अधिक समय तक शिक्षक न होने के कारण बच्चों के अध्ययन में अनेक समस्याऐं उत्पन्न हुई हैं, उनका पाठ्यक्रम भी पुरा नहीं हुआ है। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप इन विषयों के अन्य शिक्षकों की नियुक्ति करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।

प्रार्थी

मदन

दिनांक : 11 फरवरी, 2017

PTO

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा ____ अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5 क वाक्य में अकर्मक क्रिया है।

परिभाषा ⇒

जब वाक्य में कर्म न हो और क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता हो तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

ख दुर्गा ⇒ व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रि स्त्रीलिंग।

विदुषी ⇒ गुणवाचक विशेषण, एकवचन

ग संयुक्त वाक्य ⇒

रचना के आधार पर वह वाक्य जिसमे दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य हो, संयुक्त वाक्य कहलाता है।

उदा. ⇒ राधा पढ़ रही है जबकि ज्योति खेल रही है।

घ रंग जमना ⇒ अपना प्रभाव बनाना।

वाक्य में प्रयोग ⇒ मोहन ने तो नए विद्यालय में आते ही अपना रंग जमा लिया।

ड. अधजल गगरी छलकत जाय ⇒ ओंछा (नीच) व्यक्ति अधिक इतराता है।

वाक्य में प्रयोग ⇒ रमेश अत्यधिक बेईमान है लेकिन फिर भी सबके सामने सज्जन व्यक्ति बना फिरता है। सच ही कहा है ओंछ अधजल गगरी

BSTR-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

छलकत जाय।

च पंक्ति में उपमा अलंकार है।
उपमा अलंकार ⇒
जब उपमेय की उपमान से तुलना की जाती है अथवा उपमेय को उपमान के समान बताया जाता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।
उपमेय – वचन उपमान – कोटि कुलिस (करोड़ वज्र)
वचन को करोड़ वज्र के समान बताया है।

खण्ड ग

6 उधौ, तुम हो _ _ _ _ _ _ _ पागी ॥

क गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहकर व्यंग्य किया है कि तुम इतने समय तक श्रीकृष्ण के पास रहकर भी उन पर मोहित नहीं हुए, उनके प्रेम के बंधन में नहीं बंधे इसलिए तुम विरह का दुःख नहीं जानते हो अतः तुम भाग्यशाली हो। गोपियों ने उद्धव को व्यंग्य रूप में अभागा कहा है जो श्रीकृष्ण पर मुग्ध नहीं हुआ, प्रेम का आनंद नहीं ले सका।

ख प्रीति नदी में पाऊँ न बोरयो से आशय है कि प्रेम रूपी नदी में पैर नहीं रखा अर्थात् श्रीकृष्ण पर मुग्ध नहीं हुए। श्रीकृष्ण के प्रेम में

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

नहीं बंधे। उनके रूप पर स्नेह नहीं हुआ और प्रेम के धागे से नहीं बंधे। इतने समय तक श्रीकृष्ण के पास रहकर उनके प्रेम से अप्रभावित रहे।

7 क गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी कहा है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजों में लकड़ी को सदैव रखता है उसी प्रकार गोपियां भी श्रीकृष्ण को मन, कर्म, वचन से अपने हृदय में धारण कर रखा है। स्वप्न में, दिन में, रात में केवल श्रीकृष्ण का नाम रटती रहती हैं अर्थात् वे श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं।

ख कवि नागार्जुन ने अपनी "फसल" नामक कविता में फसल को अनेक नदियों के जल का जाद, किसान व श्रमिक के हाथों के श्रम की महिमा, काली, भूरी, पीली आदि अनेक प्रकार की मिट्टी का गुणधर्म, सूर्य के प्रकाश का रूपांतरण व हवा की थिरकन कहा है। फसल पैदा करने में पानी, श्रम, मिट्टी, सूर्य का प्रकाश व हवा आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। फसल प्रकृति व मानव के सम्मिलित सहयोग से ही पैदा होती है।

IISER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ग मंगलेश डबराल की कविता 'संगतकार' में मुख्य गायक का साथ संगतकार देता हैं। यह मुख्य गायक की भारी आवाज में अपनी पतली कंपकंपाती आवाज मिलाकर स्वर में संतुलन बनाए रखता हैं। मुख्य गायक को स्थायी अंतरे से भटकने से बचाता हैं। उसे सान्त्वना देता हैं जब मुख्य गायक का गला बैठ जाता हैं व उत्साह नष्ट हो जाता हैं। वाद्य बजाना, परदे के पीछे गाना आदि के माध्यम से संगतकार मुख्य गायक का साथ देता हैं।

8 पाँयनि - - - - - - - - - - सहाई ॥

क जग-मंदिर-सुंदर में रूपक अलंकार हैं।

ख श्रीकृष्ण राजसी रूप सौंदर्य में अत्यंत सुंदर व दुल्हे के समान लग रहें हैं इसलिए कवि देव ने श्रीकृष्ण को ब्रज का दूल्हा कहा हैं।

ग श्रीकृष्ण ने पैरों में घुंघुरू वाली पायल पहन रखी हैं, कमर में करधनी धारण कर रखी हैं व शरीर पर पीले वस्त्र व गले में वन के फूलों की माला पहने हुए हैं। माथे पर मुकुट धारण कर रखा हैं।

घ किरीट का अर्थ - मुकुट

PTO

परीक्षक द्वारा प्राप्तांक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

फादर — — — — — — आता है।

9

क फादर बुल्के के मन में सदैव दूसरों के प्रति करुणा, वात्सल्य, प्रेम, स्नेह आदि भरा है है। वे दूसरों के प्रति अपनत्व का भाव रखते थे। उनकी मृत्यु के बाद उन्हें याद करने पर शांति व उदासी छा जाती है जिस प्रकार एक उदास संगीत सुनने के समय छाती है। इस कारण लेखक ने फादर को याद करना उदास संगीत सुनने के समान बताया है।

ख "परिमल" नामक संस्था में गोष्ठियों का आयोजन किया जाता था। इसमें कविता, कहानी, नाटक व उपन्यास आदि पर चर्चा की जाती व बहस होती थी। इसके अलावा कवियों व लेखकों को उनकी रचनाओं पर राय व सुझाव भी दिए जाते थे। कभी-कभी हंसी-मजाक भी होता था। परिमल संस्था एक परिवार के समान थी।

10 क बालगोबिन भगत की चारित्रिक विशेषताएं निम्न हैं:-

i) कबीरपंथी विचारों में आस्था ⇒ बालगोबिन भगत कबीर के प्रति आस्था रखते थे, उन्हीं के भजन गाते, उन्हीं के आदर्शों पर चलते थे, कभी झूठ नहीं बोलते, किसी की चीज बिना पूछे व्यवहार में नहीं लाते थे।

ii) सामाजिक परम्पराओं के आलोचक ⇒ ~~कब~~ भगत ने कई

परीक्षक द्वारा प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

गलत परम्पराओं का खंडन किया। जैसे : उन्होंने अपने पुत्र की चिता को अग्नि अपनी पुत्रवधू द्वारा दिलवाई, और अपनी पुत्रवधू के भाई को बुलाकर उसकी दूसरी शादी कर देने को कहा।

iii) तल्लीनता ⇒ भगत जब खंजड़ी बजाते थे तो एक दम मुग्ध हो जाते थे। सर्दी में भी उनके माथे से पसीना निकलता था जब वे गाते थे और उनकी कंबल भी अलग हो जाती थी।

ख फादर कामिल बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। उन्होंने सन्यास लेने का केवल संकल्प किया था। लेकिन वे मन से संन्यासी नही थे। एक बार जब किसी से रिश्ता जोड़ लेते तो उसे निभाते थे। वे अन्य संन्यासियों की तरह वितरागी नहीं थे। जब भी वे किसी से मिलते तो उनके दुःख-सुख, घर-परिवार के बारे में पूछते थे। लेखक व फादर का संबंध तो उड साल तक का था। वे जब भी इलाहाबाद जाते, दिल्ली जाते तो उनसे जरुर मिलते थे। इसलिए कहा जा सकता है कि वे केवल संकल्प से संन्यासी थे, मन से नहीं।

घ प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खां का जन्म डुमराव नामक स्थान पर हुआ। उनके बचपन का नाम अमीरुद्दीन था। वे पैगम्बर खां व मिट्ठन के छोटे शाहबजादे थे। उनका जन्म संगीत प्रेमी व मुस्लिम परिवार में हुआ। उन्हें संगीत की प्रेरणा रसूलन बाई,

PTO

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बतूलन बाई, उनके नाना व मामाद्वय से मिली। वे सच्चे सुर के उपासक, हिन्दु - मुस्लिम संस्कृति की एकता के प्रतीक, सरल स्वभाव के थे। शहनाई के प्रसीद्ध वादक थे। पद्मविभूषण व अनेक उपाधियों से सम्मानित बिस्मिल्ला खां 80 वर्ष तक शहनाई वादन कर विदा हुए।

11 ख लखनवी अंदाज नामक कहानी में लेखक यशपाल ने पतनशील सांमती वर्ग पर कटाक्ष किया है जो वास्तविकता से दूर बनावटी जीवन जी रहे हैं। साथ ही नई कहानी के लेखक के ऊपर भी व्यंग्य किया हैं जो बिना, घटना, पात्र के कहानी लिखते हैं। आज मानव केवल औपचारिकता निभा रहा हैं व अपनेपन का भाव धीरे-2 नष्ट होता जा रहा हैं।

खण्ड घ

12 क "माता का अंचल" नामक पाठ में लेखक शिव पूजन सहाय ने देहाती दुनिया का मनोरम चित्रण किया है। तत्कालीन देहाती समाज की स्थिति, बच्चों का स्वभाव आदि का चित्रण हैं, ग्रामीण जीवन में प्रभु के प्रति आस्था, रूढ़ीवादी भावना आदि का वर्णन भोलानाथ के पिता से होता हैं। उस समय ग्रामीण समाज में खेती पारंपरिक औजारों जैसे हल आदि से की जाती थी इसका वर्णन बच्चों के खेल से होता हैं, बच्चों के खेल व खेल सामग्री भी ग्रामीण

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

परिवेश को रेखांकित करती है। माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति वात्सल्य, स्नेह, तरह-तरह के खेल, मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाना, बच्चों का सरल व निर्भय स्वभाव, आदि से ग्रामीण समाज का रेखाचित्र मन में उतर जाता है। पाठ में आए लोकगीत व बच्चों की शरारत भी देहाती दुनिया का दृश्य उत्पन्न कर देती हैं।

13 क जॉर्ज पंचम की नाक वापस लगाने के लिए मूर्तिकार ने अनेक प्रयास किए। सर्वप्रथम प्राचीन फाइलों को देखा गया ताकि मूर्ति कब बनी व पत्थर का पता चल सके। मूर्तिकार ने देश भर के पर्वतीय प्रदेशों का दौरा किया। लेकिन वह पत्थर नहीं मिला। भारत में शहीद हुए महापुरुषों व 1942 में बिहार में शहीद हुए बच्चे की मूर्ति की नाक की माप ली। लेकिन उनकी नाक बड़ी निकली। अंत में जिंदा नाक लगाने का उपाय किया गया।

ग दुलारी का टुन्नू के प्रति पवित्र प्रेम था, उसके हृदय में टुन्नू का एक स्थान दृढवत स्थापित था। इसी कारण जब टुन्नू दुलारी के घर बार-2 आता है तो वह उसे डांटकर निकाल देती थी। क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि टुन्नू जो ब्राह्मण का पुत्र है उसकी गली में आकर बदनाम हो। इसके अलावा दुलारी ने टुन्नू

PTO

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

से प्रेरित होकर विदेशी मिलों में बनी साड़ियों के बंडल फेंक दिए व खादी की साड़ी पहनी।

घ "माता का आँचल" नामक पाठ में बालक भोलानाथ अपने पिताजी के साथ हर वक्त रहता था। अपने पिता के साथ खाना खाता, पूजा करता, व मछलियों को आटे की गोलियां खिलाने जाता था। जब पिताजी उससे खट्टा-मिठा चुंबन मांगते तो वह अपने गाल आगे कर देता। पिताजी भी जब भोलानाथ रोने लगता तो उसे गोद में ले लेते व शांत करवाते थे। कभी-कभी उनके खेल में भी शामिल हो जाते।

14 क गाड़ी चलाने के लिए लाइसेंस, वाहन बीमा आदि आवश्यक है।
व्यक्ति को रिफ्लेक्टर, बस लेन, गति मापक यंत्र, रेड स्पीड कैमरा, श्वांस विश्लेषक यंत्र आदि के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।
व्यक्ति को यातायात के नियमों व ट्रैफिक सिग्नल की भी जानकारी होनी चाहिए।

ख शराब पीकर गाड़ी चलाने पर दुर्घटना का खतरा दुगुना बढ़ जाता है क्योंकि व्यक्ति अपने उपर व वाहन पर नियंत्रण नहीं रख पाता है। ध्यान केन्द्रित करने में समस्या आती है, ~~आप~~ अगर वाहन चालक के 100ML रक्त में 30mg एल्कोहल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

की मात्रा से अधिक पाई जाती है तो उसे 2000 रु. जुर्माना व 6 माह की सजा का प्रावधान है। अथवा दोनों। अतः शराब पीकर गाड़ी नही चलानी चाहिए।

II क महावीर प्रसाद द्विवेदा ने हिन्दी के विकास में अपना महत्वपुर्ण योगदान दिया है। उन्होंने न केवल पद्य में बल्कि गद्य में भी खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया है। उन्होने हिन्दी को व्याकरण संमत बनाने, शब्द भण्डार बढाने में अपना योगदान दिया है। व्यंग्यात्मक, विरोधाभास शैली का प्रयोग कर हिन्दी भाषा का महत्व बढ़ाया है।

॥ समाप्त ॥